न्यायाचार्य बलराम स्वामी : जीवनवृत्त

डॉ. सुरेन्द्र कुमार शर्मा
पूर्व प्राचार्य,
श्री दादू आचार्य संस्कृत महाविद्यालय, जयपुर

आपने सभी परीक्षाओं को सर्वाधिक अंकों से उत्तीर्ण किया। आपकी इस अद्‌भुत प्रतिभा से तत्कालीन प्राचार्य पंथी रामचंद्र जी महाराज जो महान् वैयाकरण रहे हैं, आपकी सर्वत्र प्रशंसा करते थे। आप में कवित्व की अनुपम प्रतिभा थी। आपकी दक्षता संस्कृत श्लोकरचना में इतनी थी, कि आप चलते चलते ही श्लोक की रचना कर लेते थे। इसी प्रतिभा को आपने अपने प्रौढ ग्रंथों की रचना की विधा बनाया। आप 1942 से आजीवन श्रीदादूमहाविद्यालय व दादूपंथ के कार्यों में संलग्न रहे। आपने व्याख्याता व प्राचार्य पद पर महाविद्यालय में अपनी सेवाएं प्रदान कीं।

आपको एक कथावाचक के रूप में भी जाना जाता है। आपको कथावाचन में कथावाचस्पति की प्रसिद्ध उपाधि प्रदान की गयी। आप अपने गुरु के पश्चात् मण्डलेश्वर हुए व आयुर्वेद मार्त्तण्ड स्वामी लक्ष्मीरामजी संस्थापक श्रीदादू महाविद्यालय की हवेली में अपने जीवन के अन्तिम क्षणों तक रहते हुए सारस्वत साधनारत रहे। आपने जितनी रचनाएँ कीं, वे सब संस्कृत एवं दादूपंथ के लिए अति दुर्लभ थी। आपके अति महत्त्वपूर्ण ग्रंथ परमाणुवाद का प्रकाशन अनुवाद सहित किया जा चुका है। आपने एक व्याख्यान बनारस हिंदू विश्वविद्यालय में इस विषय पर दिया, जिसमें आपको पारितोषिक रूप में स्वर्णपदक प्राप्त हुआ था।

सम्वत् 2002 में जयपुर में होने वाली अखिल भारतीय संस्कृत साहित्य सम्मेलन की निबन्ध प्रतियोगिता में भी आपने 'संस्कृत साहित्य में राजनीति' नामक निबन्ध लिखा था, जिसे तत्कालीन विद्वानों ने बहुत सराहा, परन्तु दुर्भाग्य की बात यह थी, कि आपको उस स्तर पर ख्याति नहीं मिल पायी। आपने अपने जीवनकाल में करीब 3 हजार पृष्ठ लिखे, परन्तु सभी अप्रकाशित रहे। अनेक ग्रंथों की रचना व वेदवाचस्पति पं. मधुसूदन ओझा के वेदविज्ञानविषयक ग्रंथों की रचना की सुरक्षित प्रति आप ही तैयार करके प्रकाशनयोग्य बनाया करते थे, परन्तु आपको इस तपस्या का परिणाम अपने जीवनकाल में नहीं मिल सका।

आप न्यायदर्शन के आधिकारिक विद्वान रहे हैं। आपने परमाणुसिद्धान्त को आधुनिक परमाणुसिद्धान्त के संदर्भ में प्रतिपादित कर अति प्रौढ ग्रंथ परमाणुवाद की रचना की।

महापुरुषों के जीवनचरित लिखने की जो परिपाटी चली आ रही है, उसका मुख्य उद्देश्य यही है, कि मानव उनके जीवन से प्रेरणा प्राप्त कर अपने को उच्च लक्ष्य की ओर अग्रसर कर सके, महान् आचार्यों के जीवनचरित से साधारण मनुष्य अपने को उच्च बनाने की अधिक प्रेरणा ग्रहण कर सकता है, क्योंकि ये आचार्य जन्म से साधारण मनुष्य ही होते हैं, किंतु अपनी साधना के कारण महान् बनते हैं। वे जीवन में मानवसुलभ अवगुणों का परित्याग कर गुणों को ग्रहण करते हैं। वे जीवन को त्याग व तपस्या की कसौटी पर कसते हैं, तभी उनका व्यक्तित्व तपाये हुए स्वर्ण की तरह चमक उठता है, जैसा कि दादू जी महाराज ने कहा है:-

'औगुण छाँडि गुण गहै सोइ शिरोमणि होय' अतः जन साधारण उनके जीवन के उच्च आदर्शों को आसानी से ग्रहण कर सकता है। ऐसे ही महान आचार्य हुए हैं, स्वामी बलराम जी महाराज। स्वामी जी का जन्म फाल्गुन शुक्ला अष्टमी सम्वत् 1960 को (14 फरवरी 1933) को ग्राम मण्डा फुलेरा जयपुर के एक कुमावत परिवार में हुआ। अति साधारण परिवार में जन्मे महाराज को जन्म से ही सन्त सान्निध्य प्राप्त हुआ। वे दादूपंथी महाराज मण्डलेश्वर श्रीबालराम जी से दीक्षित हुए व जयपुर स्थित संस्कृत अध्ययन केंद्र श्रीदादू आचार्य संस्कृत महाविद्यालय में 8 वर्ष की अवस्था में भेज दिये गये। संतों की प्रेरणा और कृपा से जो कार्य होता है, वह उत्तरोतर वृद्धिकारक होता है। दादू महाविद्यालय में आपको त्यागमूर्ति सन्त शिरोमणि मंगलदास जी महाराज का सान्निध्य मिल गया। ज्ञान, त्याग एवं चरित्र निर्माता की प्रतिमूर्ति मंगलदास जी महाराज के सान्निध्य में आपका ज्ञानयज्ञ प्रारम्भ हुआ। आपकी विलक्षण प्रतिभा को देख कर आगामी अध्ययन हेतु आपको महाराज ने गवर्नमेन्ट संस्कृत कॉलेज बनारस में भेज दिया। वहाँ से आपने वेदांत शास्त्री व न्यायाचार्य परीक्षायें उत्तीर्ण कीं। पुनः आप जयपुर पधारे व महाराज संस्कृत कॉलेज जयपुर की आयुर्वेद व मीमांसा शास्त्री परीक्षा उत्तीर्ण की, साथ ही आपने अंग्रेजी भाषा की दक्षता भी प्राप्त की।

आपके द्वारा रचित **'पारिमाण्डल्य परिच्छितिः'** ग्रन्थ दुर्भाग्यवश यह अभी कहीं उपलब्ध नहीं हो पा रहा। आप व्याकरणशास्त्र के भी विद्वान् थे। आपने व्याकरण के सूत्रों को श्लोकबद्ध किया, जिससे छात्र सहजता से याद कर सकें। दादू सम्प्रदाय में आप प्रसिद्धि पा चुके थे। आप प्रवचन तथा कथावाचन किया करते थे तथा उसी से समय निकाल कर आप रचनाएँ भी करते थे। दादू सम्प्रदाय की साहित्यरचना में आपने दादूवाणी का संस्कृत अनुवाद किया, जो कुछ कुछ अंशो में ही प्राप्त होता है। आपने आरती स्तोत्र आदि की रचना की तथा विचारसागर जो कि अद्वैत वेदांत का अतिप्रौढ ग्रंथ है, उसका संस्कृत पद्यात्मक अनुवाद आप ही कर सकते थे, जो किया तथा प्रश्नोपनिषद् पर प्राणोपनिषद् भाष्य भी आपके द्वारा लिखा गया।

इसके अतिरिक्त आपकी रचनावली में संस्कृत साहित्य में राजनीति श्री हयग्रीवकवचम्, स्वरव्यंजनज्योतिषम् हिरण्यगर्भसूक्तव्याख्या आदि भी उपलब्ध होते हैं।

इति शम्